फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 102 दिसम्बर 1996

अपने बारे में, इस अखबार के बारे में बात करने आप किसी भी दिन मजदूर लाइब्रेरी आ सकते / सकती हैं।

क्यों जानें ? क्या-क्या जानें ? कैसे जानें ? क्या-क्या कर सकते हैं ?

हमारे तन पर ही नहीं बल्कि मन-मस्तिष्क पर भी बोझ इस कदर बढ गया है कि रुटीन से हट कर कोई बात होती है तो पहले-पहल उत्सुकता की बजाय अनमनेपन का भाव उभरता है। स्वाभाविक होते हुये भी लीक के प्रति हमारी नतमस्तकता हमारे तन-मन पर बोझा बढ़ाना सरल बनाती है।

दरअसल प्रश्न "क्यों जानें ? "का नहीं है बल्कि असल सवाल" क्या-क्या जानें?" का है। संस्कारों की घुट्टी तो कुछ कम हुई है पर इससे कुछ भी राहत हमें नहीं मिली है क्योंकि जानकारियों की बाढ़ में हम फँस गये हैं। बड़े-बड़े अखबार-पत्रिकायें- रेडियो-टी वी हमारे लिये निरर्थक बातों को चमक-दमक के साथ परोसते हैं। भंवरजाल से निकलने के वास्ते मसले को आसानी से समझने के लिये आइये इसे फैक्ट्रियों के दायरे में देखते हैं।

रुटीन टिकाऊ नहीं है

हर चीज गतिशील है, हरकत में है — समाज भी। और वर्तमान समाज की गतिशीलता मजदूरों के तन-मन पर बढता बोझ लिये है। यह किसी की मर्जी का सवाल नहीं है। एक जॉब-हुनर की बजाय अनेक जॉब करने को मजबूर किया जाना, परमानेन्टों का कैजुअल व ठेकेदारों के मजदूरों में बढती तादाद में बदले जाना वर्तमान व्यवस्था के चलते लाजिमी है। **मैटल बॉक्स** के परमानेन्ट मजदूरों का **ओरियन्ट फैन** में ठेकेदारों के वरकरों के तौर पर काम करना, **केल्विनेटर-व्हर्लपूल** के परमानेन्ट वरकरों द्वारा हिसाब ले कर फिर **केल्विनेटर-व्हर्लपूल** में कैजुअल मजदूर बन कर काम करना, **पाकिस्तान सरकार** द्वारा 40 हजार सरकारी कर्मचारियों की एक झटके में बर्खास्तगी इस समाज व्यवस्था के लक्षण मात्र हैं। स्थाई डिपार्टमेन्ट - फिक्स जॉब - परमानेन्ट नौकरी दस साल के पैमाने पर भी मृगमरीचिका हैं, भ्रमजाल हैं। ऐसे में "चलो जैसे-तैसे कट ही रही है और कट ही जायेगी" कह कर चाकरी की अथाह जलालत को झेलना सरासर नासमझी है। जहाँ "हम" भंवर में हों वहाँ कोई "मैं" अँगद का पाँव नहीं हो सकता।

यह अक्सर होता है कि टाइम पर तनखा मिलने और इनसैन्टिव व ओवर टाईम के दौर में परमानेन्ट वरकर अपने में मगन-से हो जाते हैं। ऐसे समय वे अन्य मजदूरों की समस्याओं के प्रति "अपने को किसी से मतलब नहीं" अथवा "बेचारों का बुरा हाल है" की भावना रखते हैं। 1980 में **गेडोर-झालानी टूल्स** के मजदूर ऐसी एक मिसाल थे तो 1985 में **यूनिवर्सल इंजिनियरिंग-वी एक्स एल** के वरकर ; 1990 में **कटलर हैमर** के मजदूरों का ऐसा रुख था तो आज इनवैल ट्रान्समिशन के वरकर ऐसी मनोभावना के शिकार हैं। कुछ वर्ष पहले तक **अमरीका** में **जनरल मोटर्स** कम्पनी की वह हैसियत थी कि " जो जनरल मोटर्स के लिये अच्छा है वह अमरीका के लिये अच्छा है" जैसी फिकरेबाजी चलती थी। परन्तु उसी जनरल मोटर्स में जारी बड़े पैमाने की छँटनी ने आज दसियों हजार मजदूरों को सड़क पर ला दिया है और ओकलहामा में विशाल सरकारी इमारत पर बम हमला इससे उपजी बदहवासी का लक्षण मात्र है।

हम न भी देखना चाहें, **एस्कोर्ट्स - गुडईयर-आयशर -पोरिट्स स्पेन्सर - उषा - लार्सन टूब्रो-टेलर-टालब्रोस** के परमानेन्ट मजदूर न भी देखना चाहें तो भी मैनेजमेन्टें और बिचौलिये हमें धमकाने के लिये बन्द पड़ी फैक्ट्रियों के मजदूरों की दुर्दशा दिखाते हैं। वे लोग दिल्ली बॉडर पर **उषा स्पिनिंग एन्ड वीविंग मिल**, बुढिया नाले पर **भारतीया इलेक्ट्रिक स्टील**, रेल लाइन पार **भारत कारपेट्स**, मथुरा रोड़ पर बंगाल सूटिंग, इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित **राजेन्द्रा पेपर मिल, दिल्ली पेपर मिल, मैटल बॉक्स, ईस्ट इंडिया जूट मिल, ढॉंढा इंजिनियरिंग, इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड**, 24 सैक्टर स्थित **डाबड़ीवाला स्टील, डेल्टा टूल्स**, कटलर हैमर के बगल की **नोरदर्न इंडिया आयरन एण्ड स्टील**, 6 सैक्टर में **सोवरिन निटवर्क्स**, झाड़सेंतली के पास **आटोमीटर, एलसन कॉटन मिल** आदि-आदि-आदि फरीदाबाद में ही बन्द पड़ी फैक्ट्रियों के बदहाल व मारे-मारे फिर रहे परमानेन्ट मजदूरों को उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। फरीदाबाद में ही हर समय कहीं न कहीं तालाबन्दी और क्लोजर के हथियार परमानेन्ट मजदूरों की तकलीफें बढ़ाने में लगे होते हैं।

कल हमारे साथ जिसके होने की बड़ी सम्भावना है, जिसका होना निश्चित है उससे निपटने के लिये जानें। प्रति क्षण के हिसाब से हमें बाँधने में लगे मैनेजमेन्ट-लीडर गठजोड़ से पार पाने के लिये जानें। वर्तमान को स्थिर दिखाने में जुटे शिक्षा-दीक्षा और पत्र-पत्रिकाओं-रेडियो-टी वी द्वारा थोपी जा रही सुप्तावस्था से जागने के लिये जानें।

"क्यों जानें?" के प्रश्न पर आगे विचार करें और अपनी बातें हमें बतायें। अगले अंक में "क्या-क्या जानें? " पर चर्चा करेंगे।

(जारी)

वर्कशॉपें

फरीदाबाद में छोटी-बड़ी वर्कशॉप हजारों की संख्या में हैं। यह ओद्योगिक क्षेत्र में आये सब गाँवों और यहाँ बनी मजदूरों की तथा रिफ्युजियों की सब रिहायशी कालोनियों में हैं। इनमें कम लागत पर फैक्ट्रियों के लिए पार्ट्स तैयार किये जाते हैं। कम लागत के फेर में वर्कशॉपों में ज्यादातर मशीनरी पुरानी और कबाड़े से खरीदी होती है। इस वजह से एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं और मजदूरों के हाथ-पैर कटना आम बात है। पैसे बचाने के चक्कर में वर्कशॉपों में इलेक्ट्रिक वायरिंग नहीं करवाई जाती, तार लटकते रहते हैं और बिजली की अर्थिंग भी नहीं करवाई जाती। इस वजह से बिजली के झटके घातक बन जाते हैं। मुजेसर स्थित **लाम्बा स्टील बॉल्स** और **भारद्वाज इलेक्ट्रोप्लेटिंग** में हाल ही में इलेक्ट्रिक शॉक लगने से दो मजदूरों की मौत हो गई।

नीची छत, एस्बेसटोस की चद्दरें, कम जगह, एग्जास्ट फैन का अभाव वर्कशॉपों में आम है। यह भी लागत कम करने के नतीजे हैं। इस वजह से वर्कशॉपें धूल, धुँआ, गैस और शोर के गोदाम हैं। किस्म-किस्म की बीमारियाँ वर्कशॉप मजदूरों की नियती बन गई हैं।

स्त्री हो चाहे पुरुष, वर्कशॉपों में सरकार द्वारा निर्धारित 1460 रुपये न्यूनतम वेतन आमतौर पर मजदूरों को नहीं दिया जाता। बड़ी संख्या में महिलायें और बच्चे वर्कशॉपों में 600 - 800 रुपये महीना पर काम करते हैं। 8 घन्टे की ड्युटी के बाद 2 - 4 - 8 घन्टे जबरन ओवर टाइम करवाने की वर्कशॉपों में रिवाज है।

वर्कशॉप मजदूरों की बात शायद ही कोई करता है। अपनी बातें इस अखबार के जरिये कहें। आपके कोई पैसे खर्च नहीं होंगे। जो वर्कशॉप वरकर अपनी बात कहेंगे उनके नाम हम किसी को नहीं बतायेंगे। ■

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच मच्छी मार्केट की बगल में है।)

मजदूरिन के बच्चे

'साइट' पर पड़े हैं।
नंगे, धूप में, भूखे बिलख रहे हैं।
ऐसा नहीं कि माँ का ध्यान नहीं है,
पर काम छोड़ कर आना ही आसान नहीं है।
बोझा ढो-ढो कर थक जाती है,
रो-रो कर थक जाते हैं –
मजदूरिन के बच्चे।

लो, लंच का टेम हो गया
माँ बच्चों का मेल हो गया।
माँ चटनी-रोटी खाती है,
बच्चे को सूखी रोटी मिल पाती है।
छोटा बच्चा माँ के स्तन से चिपक –
कुछ दूध और कुछ रक्त पीता है।
भूखे ही रह जाते हैं –
मजदूरिन के बच्चे।

जानती है माँ
इसीलिये लाती है,
रात को पके चावल का पानी।
बच्चे को निर्बल स्तन से हटा –
पिलाती है वह पानी।
फिर थपकी दे-दे कर –
बच्चों को सुलाती है।
कुछ देर के लिये सो जाते हैं –
मजदूरिन के बच्चे।

आज रात रोटी की चिन्ता
और बच्चे को थपकी के बीच –
झपकी सी आ जाती है,
लेकिन ठेकेदार की डाँट –
झकझोर कर उसे जगाती है।
फिर ईंटें, गीली ईंटें, रक्तिम ईंटें –
रक्त की गति बढ़ाती हैं।
जाग कर माँ-माँ चिल्लाते हैं –
मजदूरिन के बच्चे।

मजदूरिन की आज तबियत ठीक नहीं है,
फिर भी वह काम पर लगी हुई है।
"ठेकेदार जी आज पइसा दे दोगे;
हमरे पास एक पइसा भी नहीं है।"
"हाँ देखेंगे" डेली का जवाब यही है।
नीचे आ कर, बच्चे को पानी पिला –
वह सुलाती है।
फिर ले कर ईंटें ऊपर जाती है।
नींद में भी रोते हैं
मजदूरिन के बच्चे।

अब लगता है मजदूरिन को
तेज हो गया ज्वर है,
लगती हैं ईंटें भी भारी –
और काँपता स्वर है।
काम मगर नहीं रुक सकता –
भूखे पेट पर नजर है।
चढ़ी सीढियाँ, ईंटें भारी –
आया चक्कर, गिरी लुढक कर –
धरती पर लाश पड़ी है।
शोर को सुन कर जाग उठे जो –
माँ-माँ चिल्ला रहे हैं,
मजदूरिन के बच्चे।

– बलविन्द्र, दिल्ली

कार्बन

कार्बन सनी जुराब धोती पत्नी
अनमनी हो रही थी
न जाने कहाँ-कहाँ की गन्दगी
हमें ही धोनी पड़ती है।

उसे क्या पता कि मजदूर
कार्बन खाते, कार्बन सूँघते
कार्बनमय हुये रहते हैं
रबड़ की फैक्ट्रियों में।

पीली तप्त आँखें खोडक-सा
आभास देती
धँसी रहती हैं चेहरों पर
आँखें, समेटे हैं घृणा को
आँखें, देखती हैं घृणा से
टर्र-टर्र करते मैनेजर,
फोरमैन, सुपरवाइजर को...

पपड़ाते होठों से भद्दी गाली भी
सुननी पड़ती है मैनेजर को...

कार्बन की धूसर नीम-सा स्वाद
बदलना पड़ता है
मीठी अधपकी चाय से
जैसे टरटराते मैनेजर से बिगड़े मूड को
आपस की मीठी-मीठी गालियों से।

हट्टे-कट्टे यौवनमय शरीर
हमारे भी थे कभी
अब तो हम कार्बनमय
लंगूर-सा दीखते हैं।

पत्नी को क्या पता
कैसे कार्बनमय हुऐ रहते हैं
रबड़ की फैक्ट्रियों में हम।

– अशोक, फरीदाबाद

इस अंक की हम पाँच हजार प्रतियाँ ही फ्री बाँट पा रहे हैं। पाँच हजार मजदूर अगर हर महीने एक-एक रुपया दें तो दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

खत डालने के लिये पता है : मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद-121001

वर्कशॉपों में महिलायें

मैं कुछ समय से एक वर्कशॉप में काम करती हूँ। वर्कशॉप में मैंने जो माहौल देखा है उसके बारे में लिखना चाहती हूँ। काम करते समय मालिक आ कर खड़ा हो जाता है और कहता है काम करो, काम करो। उसके नहीं होने पर चौकीदार खड़ा हो जाता है और कहता है काम करो, काम करो। हम महिलाओं को यहाँ से वहाँ नहीं जाने देते। हम उनके सामने हँस-बोल तक नहीं सकते। सिर्फ काम करना पड़ता है। चौकीदार खुद भी एक मजदूर है पर थोड़े से रुपये के लिये मालिक की तरफदारी करता है। थोड़े लेट हो जायें तो वो भी पैसे काटने की धमकी देता है। हर वर्कशॉप की यही हालत है। पीने का पानी ठीक से नहीं मिलता है, गन्दा भी है पर मजबूरी में पीना पड़ता है। साबुन भी ठीक से नहीं मिलती है। चौकीदार से कहो कि साबुन माँग कर दो तो वह चुप्पी साध लेता है, तब उसको डर लगता है मालिक से बोलने में। हमें कम तनखा में काम करना पड़ता है, सिर्फ 750 रुपये मिलते हैं और ऊपर से इनकी दादागिरी भी सहो। वर्कशॉप से चौकीदार के चले जाने के बाद हम महिलायें हँस-हँस कर बात करती हैं। हम आपस में बोलती हैं कि महिलायें बात नहीं करेंगी तो काम करना मुश्किल होगा। वैसे भी फैक्ट्री एक कैदखाना है। दूसरों के लिये काम करना किसी को भी अच्छा नहीं लगता। ऊपर से उनकी डाँट खाओ और कम तनखा में काम भी करो। परन्तु मजबूरी में करना पड़ता है। हम देखती हैं हर मजदूर के चेहरे पर उदासी दीखती है। हर मजदूर की माँग यह होनी चाहिए कि वर्कशॉपों में मजदूरों को सरकारी रेट मिले और हर सुविधा हो।

28.11.96 – एक महिला मजदूर

एक्सल इंडिया

प्लाट नम्बर 274 सैक्टर–24 की इस फैक्ट्री में मैं कई साल से काम कर रहा हूँ। अभी तक फैक्ट्री लिमिटेड नहीं हुई और न ही कोई वरकर परमानेन्ट हुआ है। सभी कैजुअल हैं – चाहे वह आपरेटर हो चाहे फोरमैन हो या सुपरवाइजर हो। हरियाणा का जो न्यूनतम वेतन है वह मैनेजमेन्ट नहीं देती। वरकर को 1000 रुपये दे कर मैनेजमेन्ट अपना उल्लू सीधा करती है। काम का लोड इतना अधिक है कि मजदूर काम करते–करते थक कर चकनाचूर हो जाते हैं। इन सब के बावजूद विशेष खुशी और आश्चर्य की बात यह है कि हमारे प्रबन्धक महोदय अपने वरकरों के हित का इतना अधिक ध्यान रखते हैं कि अक्टूबर 96 का वेतन नवम्बर के अन्त तक दे देने की कोशिश करते हैं– यदि सफल नहीं होते तो दिसम्बर 96 में देने की सोचते हैं। यह हमारी मैनेजमेन्ट की वरकरों के प्रति शुभाकांक्षा है कि वरकरों को वेतन तो देर तक देने की कोशिश करती है मगर काम चलने पर सोलह घन्टे से कम पर कभी छुट्टी नहीं करने देती। यदि किसी वरकर को आज उन्हें रोटी के लिये दस रुपये देने पड़ते हैं तो उसे यह हिदायत देते हैं कि आज तुम्हें आठ घन्टे ओवर टाइम पर रुकना है। यदि वह वरकर किसी जरूरी कारणवश छह घन्टे ओवर टाइम करके चला जाता है तो सवेरे उसका ढेर सारी गालियों से मैनेजमेन्ट स्वागत करती है।

28.11.96 – एक्सल इंडिया का एक मजदूर

(सम्पादकीय नोट : मजदूरों के परमानेन्ट होने के लिये फैक्ट्री का लिमिटेड होना जरूरी नहीं है।)

बड़ोदा से रिपोर्ट

एस्बेसटोस के शिकार

किशन गोपालनी की इस वर्ष अप्रैल में मृत्यु हो गई। किशन **अहमदाबाद थर्मल पावर प्लान्ट** के मजदूर थे। 13 बरस कैजुअली करने के बाद 1977 में वे ब्रिकलाइनिंग व इन्सुलेशन मेन्टेनैन्स में हैल्पर बने थे। 1983 में साँस फूलने की शिकायत पर कम्पनी डॉक्टर ने किशन को दमे का मरीज करार दिया और 1985 व 1987 की रुटीन चेकअप में यह बात दोहराई गई। ई एस आई डॉक्टरों ने भी यही कहा। 1989 में किशन को वैल्डर का हैल्पर बना कर वर्कशॉप में ट्रान्सफर कर दिया गया जहाँ धूल कम थी। परन्तु उनकी तबीयत खराब होती गई। 1992 में पत्नी को नौकरी देने की बात करके अफसरों ने किशन को समय-पूर्व इस्तीफा देने को कहा। लिखित आवेदन देते ही कम्पनी ने टी.बी. के कारण मेडिकली अनफिट घोषित करके इस्तीफा स्वीकार कर लिया। पत्नी की कैजुअल लेबर की तनखा से परिवार की आमदनी आधी हो गई। तबीयत और बिगड़ने पर 1995 में किशन को अहमदाबाद सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहाँ डॉक्टरों ने उनके केस को धन्धे से जुड़ी बीमारी घोषित किया। वह एस्बेसटोस के एक और शिकार हुये थे। **कार्यस्थल पर सीमेन्ट, कोयला और एस्बेसटोस की धूल में काम करने की वजह से बीमारी हुई थी।** कार्यस्थल से जुड़ी बीमारियों के खिलाफ सक्रिय एक व्यक्ति से किशन का सम्पर्क हुआ। तब सम्बन्धित अधिकारियों को शिकायत की और क्षतिपूर्ति के लिये थर्मल पावर प्लान्ट मैनेजमेन्ट के खिलाफ अदालत में केस दायर किया। किशन की मृत्यु हो गई है और कार्यस्थल पर सीमेन्ट, कोयला व एस्बेसटोस की धूल में काम करने की वजह से अहमदाबाद थर्मल पावर प्लान्ट में 8 अन्य मजदूर भी किशन की तरह बीमार हैं।

क्रोम के मारे

राम कैलाश सरोज बड़ोदा में **क्रोमियम साल्ट्स** बनाने वाली एक छोटी **केमिकल फैक्ट्री** में काम करते हैं। उनके दाहिने पैर की उँगलियों में घाव थे और दोनों पैर चर्मरोग से पीड़ित थे। कार्यस्थल से जुड़ी बीमारियों के बारे में एक गोष्ठी में राम कैलाश को पता चला कि उनके घाव क्रोमियम घाव हो सकते थे। **क्रोम के घाव हड्डी तक पहुँच जाते हैं तो वह अंग काटना जरूरी हो जाता है।** चलने-फिरने में तकलीफ बढ़ने पर राम कैलाश को अपने दाहिने पैर की उँगलियाँ कटवानी पड़ी हैं।

प्रेशर पर उड़ती कीलों की मार

नट-बोल्ट कसने और कीलें ठोकने की रफ्तार बढाने के लिये अब फैक्ट्रियों में **न्यूमैटिक गन** से प्रेशर से यह काम करवाये जाते हैं। भारी प्रेशर के जरिये किये जाने की वजह से कई बार नट-बोल्ट व कीलें छिटक जाते हैं और मजदूरों को घायल कर देते हैं। बड़ोदा में **गुजरात गार्जियन ग्लास फैक्ट्री** में इस साल 5 फरवरी को लकड़ी के बक्सों में शीशे पैक करके न्यूमैटिक गन से कीलें ठोक रहे **संजय पटेल** के पैर में एक कील छिटक कर घुस गई। साथी मजदूर संजय को फैक्ट्री में कम्पाउन्डर के पास ले गये। कील का सिरा दिख रहा था। कम्पाउन्डर ने वर्कशॉप से प्लास ला कर उससे पकड़ कर खींचा तो सिरा टूट गया। इस पर कम्पाउन्डर ने ब्लेड से चमड़ी और माँस काट कर कील ढूँढने की कोशिश की पर मिली नहीं। तब जा कर संजय को दस किलोमीटर दूर अस्पताल ले जाया गया। एक्स-रे से ढूँढ कर कील निकाली गई। अगले रोज सुबह कम्पनी की एम्बुलेंस संजय को लेने अस्पताल पहुँच गई क्योंकि एक्सीडेन्ट में चोट लगने पर कोई मजदूर 48 घन्टे तक ड्युटी नहीं करता/करती तो कानून कहता है कि फैक्ट्री इन्सपैक्टर को एक्सीडेन्ट की सूचना दी जाये। अपने रिकार्ड साफ रखने के लिये, मैनेजमेन्टें कई किस्म की तिकड़में और हरकतें करती हैं। संजय को ड्युटी ज्वाइन दिखाया पर उन्हें कोई काम नहीं दिया और तीन दिन की सवेतन छुट्टी दे दी गई। संजय अपने माता–पिता के पास सूरत चले गये। 11 फरवरी को ड्युटी पर लौटना था पर 17 तक नहीं पहुँचे तो कम्पनी के अधिकारी सूरत गये और ड्युटी ज्वाइन करने के लिए राजी कर लिया। दिन की बजाय रात और हल्के के बजाय रुटीन काम पर संजय ने 19 फरवरी को नाइट शिफ्ट में काम शुरू किया। 20 और 21 को काम करने के बाद 22 फरवरी को भी नाइट शिफ्ट में काम करते समय साढ़े तीन बजे चाय पीने के बाद संजय को गश आ गया। शिफ्ट के बाकी समय उन्होंने आराम किया। 23 को भी नाइट शिफ्ट में चाय पीने के बाद उन्हें फिर गश आ गया और संजय की मृत्यु हो गई।

ऊँचाई से गिरना

कलकत्ता से बी. कॉम. करके काम की तलाश में **शेरव महबूब रहमान** 1995 में गुजरात पहुँचे। एक दोस्त के साथ वैल्डर के हैल्पर का काम करके उन्होंने जल्दी ही वैल्डिंग करना सीख लिया। **पैट्रोन इन्जिनियरिंग** में उनकी नौकरी लग गई। दाहेज में एक बड़े कन्सट्रक्शन प्रोजेक्ट में महबूब बीस फुट ऊँचाई पर पाइप सपोर्ट वैल्ड करके दूसरी तरफ जाने के लिये मुड़े तो सीढ़ी उलट गई। सीढ़ी बाँधी हुई नहीं थी। बीस फुट गिरे महबूब की कमर टूट गई। अस्पताल में कुछ दिन रखने के बाद उन्हें जबरन छुट्टी दे दी गई। कन्सट्रक्शन साइट पर टीन की झुग्गी में दर्द से छटपटाते महबूब को देख कर उनके साथी मजदूरों ने मैनेजमेन्ट पर दबाव डाला तब उन्हें बड़ोदा में एक अस्पताल भेजा गया। 15 दिन इलाज के बाद 4 महीने का बेड रेस्ट लिख कर महबूब को डिस्चार्ज किया गया। मैं जून में महबूब से मिलने गया तब 42 डिग्री तापमान में वे टीन की झुग्गी में फर्श पर लेटे थे। हमने क्षतिपूर्ति दावे के लिए शेख महबूब को वकील करने में मदद की है।

बड़ोदा में इस प्रकार के एक्सीडेन्ट रुटीन तौर पर होते हैं।

6.11.96 —जगदीश पटेल, बड़ोदा

एक और बलि

18 नवम्बर को 25 सैक्टर स्थित **हाई पोलिमर लैब्स** फैक्ट्री में जहरीली गैस के भारी रिसाव की वजह से अगल-बगल की झुग्गी बस्तियों — कृष्ण नगर, राजीव कालोनी, लाल बहादुर शास्त्री नगर के निवासियों के बच्चों ने उल्टियाँ करनी शुरू कर दी। गुस्से से भरे लोग इकट्ठे हो कर फैक्ट्री पहुँचे। मैनेजमेन्ट ने कम्पनी का डॉक्टर बुला कर और खिला-पिला कर मामले पर लीपापोती की।

18 नवम्बर के गैस रिसाव से हाई पोलिमर लैब्स में कार्यरत कैन्टीन ठेकेदार के एक वरकर, 12-13 साल उमर के बहादुर नेपाली की हालत गम्भीर हो गई और उसने 19 नवम्बर को बादशाह खान अस्पताल में दम तोड़ दिया। बालक मजदूर की मृत्यु की घटना को मैनेजमेन्ट ने दबा दिया।

हाई पोलिमर लैब्स मजदूरों के अनुसार मैनेजमेन्ट सुपरवाइजरों को लालच दे कर वरकरों की संख्या कम कर रही है और वर्क बढ़ा रही है। इस वजह से फैक्ट्री में एक्सीडेन्टों का खतरा बढ़ता जा रहा है। एक टन की जगह सवा टन केमिकल डालने, चार घन्टे के काम को ढाई घन्टे में करवाने, ठेकेदारों के 700 - 800 मजदूरों को घटा कर 250 - 300 करने परन्तु प्रोडक्शन पहले जितना लेने का नतीजा है हाई पोलिमर लैब्स में 12-13 साल आयु के बहादुर की मौत। मैनेजमेन्टों के सिस्टम ने एक और मजदूर की बलि ले ली है। ■

कच्चे धागे (पेज चार का बाकी) ने नोटिस लगा कर कहा कि वेतन में से काटे हुये पैसे दे दिये जायेंगे और आगे पैसे नहीं काटे जायेंगे। **लीडर लाख कहें कि एग्रीमेन्ट से हाथ बँधे हैं पर एग्रीमेन्टें वास्तव में कच्चे धागे हैं।** कटलर हैमर में मजदूरों के सामुहिक कदम द्वारा मजदूरों के बीच यह साबित होते देख कर एग्रीमेन्ट को बचाने के लिये मैनेजमेन्ट पीछे हटने को मजबूर हुई है। लीडरों की एकता के चक्कर में बलि के बकरे बनने की बजाय मजदूर ऐसे ही सामुहिक कदम उठा कर कटलर हैमर मैनेजमेन्ट की छँटनी स्कीम को फेल कर सकते हैं। ■

एकता का विलाप - नई राह जरूरी

30 नवम्बर को जलूस का बिगुल बजाने वालों ने फिर ऐन मौके पर उसे कैन्सल कर दिया। इससे पहले एकता के झन्डाबरदारों ने मुख्यमंत्री के फरीदाबाद आगमन के समय यही आँसू टपकती कॉमेडी की थी।

पिछली बार पुलिस के मना करने पर नेताओं ने जलूस कैन्सल किया था और इस बार डी. सी. के व्यस्त होने को ऐसा करने का कारण बताया। जलूस के एवज में ईस्ट इंडिया कॉटन मिल पर मीटिंग कर 12 सितम्बर से लॉक आउट **ईस्ट इंडिया**, 9 महीनों से बिना वेतन वाली **झालानी टूल्स**, पहली फरवरी से बन्द पड़ी **इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड**, तीन महीने से हड़ताल वाली **सपना-सोभाग टैक्सटाइल्स** और दो महीनों से बाहर किये 174 परमानेन्ट तथा 500 ठेकेदारों के मजदूरों वाली **लखानी शूज** के लीडरों ने मजदूरों की कम उपस्थिति में छातियाँ पीटी। इन सब लीडरों के भाषणों में "सब नेता चोर हैं", "पुलिस-प्रशासन बिके हुए हैं", "सारी पार्टियाँ एक ही थैले के चट्टे-बट्टे हैं" का बरसों से बज रहा रिकार्ड-कैसेट घिसी-फटी आवाज में बजा। " सब नेता चोर हैं" कहने वाले नेता इस-उस नेता के पीछे चक्कर काटते रहे हैं और काट रहे हैं। "पुलिस-प्रशासन बिके हुए हैं" कहने वाले नेता इस-उस अफसर के पास दौड़ते रहे हैं, दौड़ रहे हैं। "सारी पार्टियाँ एक ही थैले के चट्टे-बट्टे हैं" कहने वाले नेता इस-उस पार्टी, विशेषकर सत्ताधारी पार्टी के सामने दुम हिलाते रहे हैं, हिला रहे हैं। **यह उलट-पुलट अकारण नहीं है।**

साल-दो साल की तो क्या कहना, इन दो-तीन महीनों में ही ईस्ट इंडिया, झालानी टूल्स आदि में नेता लोग कभी इसे तो कभी उसे मजदूरों को तारने वाला घोषित कर चुके हैं। छोटे-बड़े नेताओं-लीडरों की मेहनत से मजदूर दल-दल में गहरे धँसते गये हैं। सब लीडरों को चिन्ता रहती है कि बदहवासी में मजदूर कहीं उनकी जगह किसी दूसरे को अपने सिर पर न बैठा लें इसलिये शगूफे छोड़ना, नौटंकी करना लीडरी का चरित्र है। ईस्ट इंडिया, इलेक्ट्रोनिक्स, झालानी, लखानी में बड़े यूनियन लीडरों की छत्रछाया में फैक्ट्री-स्तर के लीडरों ने काफी हद तक मजदूरों को बिखेर दिया है। बची-खुची कसर इन फैक्ट्रियों के लीडर कभी किसी बहन तो कभी किसी चौधरी की छत्रछाया में पूरी कर रहे हैं। जब लीडर कहते हैं कि 80 परसैन्ट सफलता मिल चुकी है तब उनका असल मतलब यह होता है कि मजदूरों का अस्सी प्रतिशत कबाड़ा किया जा चुका है और बाकी के लिये सौदेबाजी चल रही है।

30 नवम्बर को पाँच-छह फैक्ट्रियों के लीडरों द्वारा घोषित मजदूरों के नये मसीहा ने भाषण की शुरुआत अपनी जाति बता कर की और फिर स्वयं अपना गुणगान किया। लीडर उनके लिये बहुत मेहनत कर रहे हैं इसलिये अपने-अपने लीडरों के कहे अनुसार चलने का गुरू-मन्त्र मजदूरों को दे कर सत्ताधारी पार्टी के छुटभैय्या नेता ने मजदूरों की कम उपस्थिति का जिक्र करते हुये कहा कि इतने कम लोगों का जलूस निकलता तो बेइज्जती हो जाती।

एकता वालों को, लीडरों को विलाप करते छोड़ आइये असल मुद्दे पर विचार करें। ईस्ट इंडिया के तीन हजार में से सौ-सवा सौ, झालानी टूल्स के बाइस सौ में से दो सौ, बीस-बीस तीस-तीस लखानी शूज, सपना-सोभाग टेक्सटाइल्स और इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड से — **दस-बारह हजार मजदूरों में से चार-पाँच सौ का ही नेताओं की बक-बक सुनने को पहुँचना शुभ लक्षण है। परन्तु मजदूरों द्वारा नेताओं को नकार देना पर्याप्त नहीं है। एकता, यानि नेताओं को नकेल थमाने की जगह क्या ? मजदूर क्या करें ? क्या कर सकते हैं ?**

"मजदूर खुद कुछ कर नहीं सकते" — यह विचार हमारे बीच बहुत गहरा धँसा है। नेताओं के लिये यह खाद-पानी है। यह सही है कि अकेले-अकेले मजदूर कोई खास नहीं कर सकते। परन्तु यह बात तो हर एक पर, प्रत्येक व्यक्ति पर लागू होती है। विशेषकर अब व्यक्ति का वास्ता संस्थाओं से पड़ता है और इन बिन चेहरों वाली भीमकाय दानवी आकृतियों के सम्मुख सब तीस-मार खाँ पिद्दे हैं। बड़े से बड़े नेता और अफसर के आश्वासन का थोथा होना एक अनिवार्यता है। "बड़ों" के मन की बीमारियाँ तो संस्थाओं के सम्मुख व्यक्ति के गौण हो जाने के लक्षण मात्र हैं। लीडर लाख बार मालिक-मालिक कहें परन्तु फैक्ट्रियों-कम्पनियों का कोई मालिक नहीं है। **मजदूरों का वास्ता अब मैनेजमेन्ट रूपी संस्था से है।** कोई भोलेपन में तालाबन्दी को बेशक हड़ताल कहे परन्तु यह तथ्य हमारे सामने मुँह बाये खड़ा है कि अब अपनी डिमान्डें हासिल करने के लिये मजदूरों द्वारा प्रोडक्शन बन्द करने की तुलना में अपनी शर्तें थोपने के लिये मैनेजमेन्टें यह अधिक करती हैं। हड़ताल की जगह तालाबन्दियों ने ले ली है, ले रही हैं।

हावी विचार के उलट, **हकीकत यह है कि कोई भी नेता, कोई भी अफसर मजदूरों की समस्यायें (चाहे तो भी) हल नहीं कर सकता।** इसलिये नेताओं की झूठों और धोखों पर अनन्त चर्चा निरर्थक है। **स्वयं मजदूरों में ही वह क्षमता है कि वे अपने हितों की देखभाल कर सकते हैं।** अपनी कैपेसिटी का इस्तेमाल करने के लिये व्यक्ति-व्यक्ति के बीच की भिन्नता का मजदूरों के बीच भी होना स्वीकार करके चलना होगा। इसलिये आपस में विचार-विमर्श द्वारा वह साँझे कदम ढूँढना जिन्हें सब मजूदर राजी से उठा सकते हैं की राह हम आगे बढ़ सकते हैं। विचार-विमर्श में, कदमों में सब मजदूरों की साँझेदारी की राह सामुहिकता है। यह राह लीडर सोचेंगे, फैसले लेंगे व आदेश देंगे और मजदूर इन्तजार करेंगे व हुकमों का पालन करेंगे की एकता वाली राह के बिलकुल उलट है। सामुहिकता के बारे में, नई राह के बारे में अपने विचार हमें भी बतायें।■

कच्चे धागे

आमतौर पर मैनेजमेन्टें और यूनियनें इतने लटके-झटके व टाल-मटोल करती हैं कि तीन-साला एग्रीमेन्ट अक्सर पाँच साल वाली बन जाती है। आमतौर पर एग्रीमेन्टों में मजदूर अपने लिये कुछ देखते हैं और चाहते हैं कि वे जल्दी से जल्दी हो जायें। इसलिये टाल-मटोल पर मजदूर हताश-निराश होते रहते हैं तथा खीझते रहते हैं और ऐसा समय आता है जब वरकर कहने लगते हैं कि जैसा भी हो, जैसे भी हो एग्रीमेन्ट हो जाये। मैनेजमेन्टों और यूनियनों की सारी कसरतें ऐसे माहौल बनाने के लिये ही होती हैं ताकि डिमान्ड नोटिस में मजदूरों के हित की 121 बातों की जगह मैनेजमेन्ट का 19 सूत्री चार्टर आसानी से ले सके। कुछ भी स्वीकार करने की मनोदशा मजदूरों की बना कर लीडर लोग कुछ बता कर और कुछ छिपा कर धूम-धड़ाके के साथ एग्रीमेन्ट सुनाते हैं। मीठे-मीठे स्वाद की बजाय नाराजगी हो तब भी मजदूर आमतौर पर "चलो भागते भूत की लंगोटी ही सही" कह कर एग्रीमेन्ट स्वीकार कर लेते हैं। तब "एग्रीमेन्ट की है" के नाम पर, कानून के नाम पर मजदूरों पर एक के बाद दूसरा बोझा लादने का सिलसिला शुरू होता है। एग्रीमेन्टें मजदूरों पर हमले करने का एक और जरिया मात्र हैं।

1.10.95 को **कटलर हैमर** में लीडरों ने एग्रीमेन्ट सुनाई। तीन साल में 49 परसैन्ट प्रोडक्शन बढ़ाने (वास्तव में 57.84 परसैन्ट) के एवज में 2500 रुपये बढ़ाने की बात पर आगे ही वर्क लोड से दबे जा रहे कटलर हैमर वरकर एग्रीमेन्ट से नाराज हुये पर मन मार कर तब उसे स्वीकार कर लिया। पहले साल के लिये बढ़ाये 26 प्रतिशत प्रोडक्शन ने मजदूरों के तन-मन को और खींच दिया। कटलर हैमर वरकर मन मार कर जुटे थे कि सितम्बर में कम प्रोडक्शन के नाम पर मैनेजमेन्ट ने वेतन काटने का ऐलान किया। लीडरों ने लीपा-पोती कर उसे टलवाया। अक्टूबर का वेतन जब 7 नवम्बर को दिया गया तब मजदूरों ने पाया कि मैनेजमेन्ट ने कम प्रोडक्शन के नाम पर प्रत्येक मजदूर के वेतन में से 540 से 700 रुपये काट लिये हैं। इस पर कटलर हैमर मजदूरों ने 8 नवम्बर से वर्तमान एग्रीमेन्ट से पहले वाला प्रोडक्शन देना शुरू कर दिया। दूसरा साल शुरू हो गया था इसलिये मैनेजमेन्ट ने मजदूरों द्वारा 35 परसैन्ट कम (वास्तव में 37.34 प्रतिशत कम) प्रोडक्शन देने के नोटिस लगाने शुरू कर दिये और लीडर इधर-उधर हो गये। कटलर हैमर मजदूरों ने कहा कि हमें एग्रीमेन्ट के पैसे नहीं चाहियें और हम 1.10.95 की एग्रीमेन्ट से पहले वाला प्रोडक्शन देंगे। 650 मजदूरों के इस सामुहिक कदम ने मैनेजमेन्ट और लीडरों को हक्का-बक्का कर दिया। लीडरों ने प्रचार करना शुरू किया कि फैक्ट्री बन्द हो जायेगी परन्तु मजदूर नहीं माने। कटलर हैमर मजदूरों के सामुहिक कदम को दो हफ्ते होने को हुये तब लीडरों ने गेट मीटिंग में और मैनेजमेन्ट

(बाकी पेज तीन पर)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73